उमरा के मसाईल

उमरा के फ़ज़ीलत बयान करने के लिए इतना कह देना ही काफी होगा कि अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के मेहबूब रसुल हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िन्दगी मुबारका मे 4 उमरे किये, चुनांचे –

हज़रत क़तादा रिवायत करते हैं कि मैं ने अनस बिन मालिक रजि0 से पूछा नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कितनी बार उमरा किया ? उन्होने ने कहा चार मर्तबा

(1) हुदैबिया का उमरा ज़िकादा के महीने मे, जिसे अदा करने से मुश्रिको ने आप को रोक दिया था । (आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस साल हुदैबिया के मकाम पर अपनी कुर्बानी. जिबह करके, एहराम उतार दिया)

(2) इस से अगले साल ज़ीकादा मे किया था जब मुश्रिको के दर्मियान सुलह समझौता हो गया था ।(पिछले साल के उमरे की कज़ा)

(3) जईराना का उमरा जिस साल मेरे ख्याल से आपने हुनैन के माले गनीमत तकसीम फरमाये थे ।

(4) और चौथा उमरा हज के साथ, कतादा कहते है मैने उन से पूछा आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज कितनी मर्तबा किया था ? उन्होने ने कहा एक मर्तबा । (सहीह बुखारी, किताबुल हज, उमरा के मसाईल मे, हदीस नं0 1778)

ज़ाहिर है उमरा की फज़ीलत और मुबारक हो उन सभी को जो ईमान की हालत मे सिर्फ अपने रसुल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी करते हुए और सिर्फ हुजुरे अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके से अपने खालिक के घर का दीदार और तवाफ करने की ख्वाहिश अपने दिल मे रखते है – क्योकि अल्लाह रब्बुल ईज्ज़त फरमाता है

“तुम्हारे लिए रसुल के अमल मे बेहतरीन नमूना है”

उमरा का बयान

उमरा बैतुल्लाह की ज़ियारत की एक खास शक्ल का नाम है, जिस मे हज्ज के जैसे एहराम बांधा जाता है । एहराम बांधने के बाद की तमाम पाबंदिया उमरा करने वाले पर भी हज ही की तरह लागू होती है ।

उमरा का तरीका यह है कि उमरा करने वाला मीकात (एहराम की चादरे बांधने की जगह) से उमरा के लिये एहराम बांध कर के आता है, फिर बैतुल्लाह का तवाफ़ करता है । तवाफ़ करने के बाद मुकामे–इब्राहिम पर दो रकअत नमाज़ पढ़ता है, फिर सफा–मर्वा के दर्मियान दौड़ लगाता है और बाल मुंडा कर, या कटा कर (हलक या कसर) हलाल हो जाता है, इसी का नाम उमरा है ।

सिर्फ उमरा के लिये घर से सफर करना भी जाईज़ है ।

रमज़ान मे उमरा का सवाब हज्ज के बराबर है । उमरा कर लेने के बाद तवाफे विदाअ कर के वापस लौटना चाहिये ।

उमरा के अरकान

उमरा के तीन अरकान है (1) एहराम का बांधना (यानि अपने लिए हलाल चीज़ो को अपने पर हराम कर लेना) (2) तवाफ करना (3) सफा–मर्वा के दर्मियान दौड़ लगाना ।

नफली उमरा का सवाब

नफ़्ली उमरा करना सुन्नत है । नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

''एक उमरा, दुसरे उमरा तक के लिये कफ्फारा है । और हज्जे मबरूर का बदला बस जन्नत है ।'' (मुत्ताफकुन अलैह बुखारी, मुस्लिम)

उमरा के बारे मे जरूरी ताकीद

जो लोग मक्का के बांशिदे नहीं है, बल्कि बाहर से हज या उमरा के लिये मक्का गये है अगर फिर से उमरा करना चाहे तो उन को चाहिये कि मक्का की हद से बाहर जाकर एहराम बांधे । अलबत्ता हज का एहराम सभी लोग मक्का मे जहां ठहरे है वहीं से बांध सकते है ।

नोट

छोटा उमरा या बड़ा उमरा के नाम से आम तौर पर जो उमरा हाजी करते है उस से बचना चाहिये क्योकि इस तरह का उमरा नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम और बुजुर्गो से साबित नहीं । हज़रत आयशा रजि0 को आप ने ऐसे उमरे की इजाजत इसलिये दी थी कि उन्होने हज्ज से पहले उमरा ही नहीं किया था (क्योकि वे हैज की हालत मे थी) किसी के लिये ऐस ही ही कोई मजबूरी हो तो वह यह उमरा कर सकता है ।

औरत के लिए

अगर किसी औरत मे हज करने की ताकत है तो जिस तरह मर्दो पर हज और उमरा फर्ज है इसी तरह औरतो पर भी फर्ज है । अलबत्ता औरतो के साथ महरम का होना शर्त है । औरत चाहे जिस उम्र की हो, महरम के साथ के बिना उसको हज या उमरे की इजाजत नहीं, महरम से मुराद वह मर्द है जिसे से उस औरत का निकाह सदा के लिये हराम हो जैसे बाप, बेटा, भाई, दादा, मामू, चचा वगैरह । जब तक महरम ना मिले औरत पर हज या उमरा नहीं

शौहर से इजाजत

जिस औरत पर हज फर्ज हो वह अपने शौहर से इजाजत लेकर हज पर जा सकती है, अगर शौहर इजाजत न दे तब भी वह हज पर चली जाये क्योकि फर्ज की अदायगी के लिये उसे शौहर की इजाजत की भी जरूरत नहीं ।

अलबत्ता नफली हज या उमरे के लिये उसे शौहर की इजाजत ल़ाजिम है :–

नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया औरत अपने शौहर की इजाजत के बिना नहीं जा सकती है ।(दारूकुत्नी)

माज़ूर की तरफ से उमरा

अबू रज़ीन अ़क़ीली रजि0 से रिवायत है उन्होने बयान किया कि मैने नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर कर कहा :– मेरे वालिद बहुत बुढ़े हो गये है, वह हज कर सकते है और नहीं उमरा, और न ही सवारी पर बैठ सकते है । आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :– अपने बाप की तरफ से हज भी करो और उमरा भी (तिर्मिजी, नसई, अबू दाऊद)

मीक़ात का बयान

मीकात से मुराद वह जगह है, जहां से हज और उमरा का एहराम बांधा जाता है । हज और उमरा की नियत से आने वाले हाजी अपने–अपने मीकात (यानी एहराम बांधने की जगह) से एहराम बांधे बिना हरम मे दाखिल न हो । मक्का से बाहर से आने वाले सभी हाजियों के लिये नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये मीक़ात मुकर्रर किये है :–

(1) य–लम्–लम :– हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, यमन, जावा, इंडोनेशिया, मलेशिया, नेपाल, चीन, श्रीलंका की तरफ से समुद्री जहाज से आने वालो के लिये है । यलमलम मक्का से 54 किलोमीटर दूर समुद्र के साहिल से दो हजार फुट ऊंचा एक पहाड़ है, जो मक्का से सब से करीब मीकात है ।

(2) जुल हुलैफा :– यह मदीना अथवा उस रास्ते से आने वाले सभी हाजियों के लिये मीकात है । जुलहुलैफा यह मदीना शरीफ से पांच मील और मक्का शरीफ से चार सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है जिसे आज ''बीरे अली'' कहा जाता है ।

(3) जोहफा :– यह जगह मक्का से शिमाल–मगरिब (उत्तर–पश्चिम) मे 187 किलोमीटर की दूरी पर है और शाम, मिस्र, और मगरिब की तरु से आने वाले हाजियों के लिये मीकात है । जोहफा अब एक उजाड़ और वीरान जगह है, इसलिये आम तौर पर लोग उस के करीब ''राबग'' से एहराम बांधते है । यह जगह मक्का से 204 किलोमीटर पर है ।

(4) कर्नुल–मऩाजिल :– यह जगह मक्का से पुरब की ओर एक पहाड़ी इलाका है जो अरफात से नज़र आता है और मक्का से 94 किलोमीटर पर मौजूद है । यह जगह आज ''सैल'' के नाम से मशहूर है ।

(5) ज़ाते इर्क :– यह जगह मक्का से शिमाल–मशरिक (उत्तर–पूर्व) मे 94 किलोमीटर की दूरी पर मौजूद है । ईरान, इराक और उत्तर पूर्व की तरफ से जो हाजी बग़दाद और हाइल के रास्ते से मक्का आते है वह सब इसी जगह से एहराम बांधते है ।

हवाई जहाज से सफर करने वाले मुसाफिर जब इन मीकातों के ऊपर से गुजरे तो हवा मे ही एहराम की नियत कर ले और लब्बैक पुकार दे ।

एहराम का बयान

हज्ज के अरकान मे एहराम पहला रूक्न है । ''एहराम'' कहते है हज्ज या उमरा की नियत से जिस्म पर केवल बिना सिला हुआ तहबन्द बांधना और दूसरी चार ओढ़ कर लब्बैक पुकारना और बहुत सी हलाल चीजों को अपने ऊपर हराम कर लेना ।

इसी एहराम से ही हज और उमरा का अगाज़ होता है । एहराम दर हकीकत मे हज्ज या उमरे का यूनीफार्म है ।

एहराम बांधने से पहले गुस्ल करना मुस्तहब है । इसे किसी फर्ज नमाज़ के बाद बांधना अफज़ल है, जैसा कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदाअ के मौके पर ज़ुहर की नमाज़ के बांध कर लब्बैक पुकारा था । (बुखारी)

एहराम से पहले खुश्बु का इस्तेमाल करना अफ़ज़ल और बेहतर है ।

एहराम की हालत मे ऐसा जुता जो टखने की हड्डी से नीचा हो पहन सकते है, वर्ना खुले पांव की चप्पल पहने ।

एहराम की हालत मे जिन कामों को करना हराम है

एहराम की हालत मे सभी मर्द और औरतो के लिये दर्जे ज़ेल बाते मना है :–

(1) 'र–फस' यानि जिस्मानी ताल्लुकात और इस जैसे काम । (सुरह बकरह: 197)

(2) 'फुसूक' यानि आम गुनाह, बेहयाई की बाते । (बकरा 197)

(3) 'जिदाल' यानि लड़ाई–झगड़ा । (बकरा 297)

(4) खुश्की के जानवरो का शिकार करना, शिकार की तरफ इशारा करना, (माइदा 96) (दरिया के जानवरों का शिकार करना जाइज़ है)

(5) सर मुडांना, बाल काटना (किसी भी जगह का बाल और नाखून काटना)(बकरा 196

(6) निकाह करना, निकाह कराना, निकाह का पैगाम भेजना, खुश्बू लगाना, (मुस्लिम)

(7) वर्स या केसल से रंगा कपड़ा पहनना (बुखारी, मुस्लिम)

(8) शिकारी की किसी भी तरह मदद करना, या शिकार की ओर इशारा कर के बताना (बुखारी मुस्लिम)

(9) जो शिकार मुहरिम ने किया हो, या उस मे किसी तरह की मदद की हो या उस के लिये किया गया हो, उस शिकार का खाना (अबू दाऊद, तिर्मिजी)

(10) जो परिन्दे शिकार किये जाते है उन का अंडा खाना (अबू दाऊद, तिर्मिजी)

एहराम की हालत मे मर्द के लिए हराम

(1) सर ढांकना (मुस्लिम)

(2) पूरा चेहरा ढांकना (नसई)

(3) कमीस–कुर्ता पहनना, पाजामा पहनना, पगड़ी बांधना, (बुखारी, मुस्लिम)

(4) बुर्नुस (एक तरह का जुब्बा जिस मे टोपी लगी रहती है) (बुखारी, मुस्लिम)

(5) खुफ्फैन यानि ऊनी, सूती, चमड़े का मोज़ा पहनना ।(बुखारी, मुस्लिम)

एहराम की हालत मे औरत के लिए हराम

(1) मुंह पर नकाब डालना, दास्ताना पहनना (बुखारी)

हां अगर कोई गैर महरम (यानी जिस से निकाह हलाल है –अजनबी) सामने आ जाये तो मूंह पर कपड़ा लटका लेना, अथवा किसी और चीज से मूंह छुपाना मना नहीं है । हज़रत आइशा रजि0 फरमाती है कि हज मे जब हमारे सामने हाजियों की टोली आ जाती तो हम सर से अपनी चादर चेहरे पर लटका लेती, जब वह आगे निकल जाते तो खोल लेती (अबू दाऊद)

जब औरतो के लिये नकाब मना है, तो बुर्का ओढ़ना तो और मना है । हां औरत अपनी पसंद के लेहाज़ से काला या हरा या दूसरे रंग के कपड़ो मे एहराम बांध सकती है । मगर शर्त यह है कि उसे बनाव–सिंगार और जिन्सी फितरत को बढ़ावा देना मुराद न हो (अबू दाऊद)

आइशा सिद्दीका रजि0 औरतो के लिये एहराम की हालत मे ज़ेवर पहनना, काला कपड़ा और मोज़ा पहनना जाइज़ समझती थी (बुखारी)

फिदया

नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुहरिम को जिन कामों से मना किया है, उन मे से अगर कोई काम हो जाये, जैसे बाल मुंडा ले, सिले हुये कपड़े पहन ले आदि, तो ऐसी सूरत मे उस पर फिदया (हर्जाना) वाजिब होता है । अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने फरमाया

''अगर तुम से कोई (एहराम की हालत में) बीमार हो जाये, या उस के सर मे तकलीफ हो जाये (और सर मुंडा ले) तो उस के बदले रोजे रखे, या सदका दे, या जानवर की कुर्बानी दे ।'' (सुरह बकरा 196)

हज़रत कअब बिन अ़जरा रजि0 ने बयान किया कि हुदैबिया के साल मै एहराम की हालत मे था । नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास से गुज़रे और फरमाया – ''तुम्हारे सर की जूं बहुत तकलीफ दे रही होगी? मैं ने कहा जी हां । आप ने फरमाया बाल मुंडा दो, फिर फिदया मे एक बकरी जब्ह करो, या तीन दिन के रोज़े रखो, या तीन साअ खाना छै: मुहताजों को खिलाओ ।(बुखारी, मुस्लिम, अबू दावूद)

चेतावनी

लेकिन हज के दिनो मे एहराम की हालत मे अगर बीवी से हमबिस्तरी कर लिया तो ऐसी सुरत मे इस का कोई कफ्फारा नहीं, बल्कि हज ही बातिल हो जाता है ।

एहराम की नियत

एहराम की चादर पहन लेने के बाद हाजी दर्जे ज़ेल तरीके पर हज या उमरे की नियत करेगा ।

सिर्फ हज के लिये :– ''लब्बैक हज्ज–तन''

हज और उमरे के लिये :– ''लब्बैक हज्ज–तन व उमरतैन''

सिर्फ उमरे के लिये :– ''लब्बैक उम–र–तैन''

हज या उमरे की नियत के लिये अलफाज़ से अदा करना जरूरी है । दूसरे कामों मे नियत दिल मे कर लेना काफी है ।

इसके बाद लब्बैक पुकारना चाहिये यह कही अधिक सही है कि सवारी पर सवार होकर या टोली और जत्था के साथ रवाना होते वक्त लब्बैक पुकारा जाये ।

लब्बैक के मसनून अलफ़ाज़

''लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक ला शरी–क ल–क लब्बै–क, इन्नल हम–द वन्ने–म–त ल–क वल मुल–क लाशरी–क ल–क'' (बुखारी)

''हा़जिर हूं ऐ अल्लाह । हा़जिर हूं, हा़जिर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाजिर हूं, बेशक सारी तारीफे तेरे ही लिये है और नेमते तेरी ही दी हुई है, और मुल्क तेरा ही है, तेरा कोई शरीक नहीं ।''

(1) लब्बैक बुलंद आवाज़ से पुकारना चाहिये । (अबू दावूद)

सब से अफ़ज़ल अज्ज़ और सज्ज़ है (तिर्मिजी) यानि बुलंद आवाज़ से लब्बैक का पुकारना और जानवर जब्ह करना ।

(2) अल्लबत्ता औरत इतनी आवाज़ से लब्बैक पुकारे कि खुद सुन ले । औरत के लिये ऊंचे अलफाज़ के साथ लब्बैक पुकारना मकरूह है ।

(3) दर्जे ज़ेल जगहो पर लब्बैक ज्यादा से ज्यादा पुकारना चाहिये –

1) सवारी पर सवार होते वक्त ।
2) ऊंचाई पर चढ़ते वक्त (जब आप का जहाज़ जमीन से ऊपर उठने लगे (टेक आफ) तब लब्बैक बड़ी शिद्दत से पुकारे, इंशाअल्लाह रूह तरो ताज़ा हो जायेगी)
3) किसी जत्थे से मुलाकात के वक्त
4) हर नमाज़ के वक्त ।

(यह हदीस जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि0 से मरवी है)

नोट

उमरे के एहराम मे हज़रे–असवर के इस्तेलाम (चूमना) के साथ लब्बैक पुकारना बंद कर दे ।

मुहरिम के लिए दर्जे ज़ेल काम जाइज़ है

(1) गुस्ल करना (सोते वक्त मनी के खारिज होने से हो, या आम पाकी का)(बुखारी, मुस्लिम)

(2) पानी मे डुपकी लगाना (बैहकी)

(3) सर खुजाना (बुखारी)

(4) कमर मे पट्टा बांधना (बुखारी)

(5) मुजी जानवर को मारना (कौआ, चील, बिच्छू, चूहा और कटहा कुत्ता) (बुखारी)

(6) इबरत के लिये अपने बच्चो या नौकर को मारना (अबू दावूद)

मस्जिदे हरम मे दाखिला

जब आप मक्का पहुंच जाये और होटल मे अपनी थकान वगैरह मिटा ले और हल्का सा नाश्ता वगैरह करके फारिग हो जाये तो मस्जिदे हरम के इरादे से निकले और कोशिश करे की ''बाबुस्सलाम'' (गेट नं0 24) से दाखिल हो क्योकि प्यारे आका हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम का घर ठीक इसके सामने हुआ करता था और आप अकसर और बेशतर मस्जिदे हरम मे इसी तरफ से दाखिल होते थे । और इस दरवाजे से दाखिल होने पर फायदा ये है कि एक तो सुन्नत पर अमल होता है दूजे जब आपकी नज़र खाना–ए–काबा पर पड़ती है तो आप एक साथ :– खाना–ए–काबा, बैतुल्लाह का दरवाजा, मुकामे इब्राहिम, हजरे अस्वद, हतीम, और परनाला के दीदार से मुशर्रफ होते है । और कही और से दाखिल होने मे एक साथ इन सब का दीदार थोड़ा मुश्किल होता है । खैर अगर भीड़ ज्यादा हो तो आप किसी भी दरवाजे से दाखिल हो जाये ।

मस्जिदे हरम मे दाखिल होने की दुआ

इसके लिये कोई अलग से अलफाज़ नहीं है जिस तरह हम आम मस्जिदो मे दाखिल होते वक्त जो दुआ पढ़ते है वही पढ़ ले, पहले दांया पैर दरवाजे से अंदर करे और पढ़े :–

''अल्लाहुम्मफ तहली अब–वब–व रहमति–का''

और इसके बाद अपनी नज़रो को नीचा करके फर्श को देखते हुए लब्बैक की कसरत के साथ, अपने अल्लाह को अपने साथ महसूस करते हुए, आगे बढ़ते रहे और जब फर्श खत्म होने पर सीढ़ी का एहसास हो यानि जहां से सीढिया नीचे मताफ (तवाफ करने की जगह) की तरफ जाती है उस वक्त अपने सिर को धीरे–धीरे ऊपर उठाईये, और आपके सामने खालिके कायनात का घर होगा, इस दीदार से आप जो महसूस करेगे मेरा दावा है उसे कभी सही अलफाज़ के साथ बयान नहीं कर सकेगे । यहां पर अल्लाह का वादा है कि आप पहली नज़र के साथ जो उससे मांगेगे वो जरूर आपको अता कर देगा । पहली नज़र ऐसी होती है कि लोगो का कुछ सोचने समझने का मौका नहीं लगता, कोई रोने लगता है, कोई भौचक्का खड़ा हो जाता है, यानि उसका सोचा हुआ कुछ सही हो नहीं पाता मगर फिर भी अपने आपको संभाले और अल्लाह का तोहफा कुबुल करे । लोग यहां पर मुख्तलिफ किस्म की दुआएं करते है, मेरी आपको सलाह है अगर आप दुनिया के बदले अपनी आखिरत की कामयाबी और दीन की हिदायत की दुआ मांगले तो क्या ही अच्छा हो, बहरहाल दुनिया तो खत्म होना ही है, और हमको भी दुनिया से विदा हो जाना है ।

तवाफ

''तवाफ'' का मतलब है ''चक्कर लगाना'' । तवाफ सिर्फ बैतुल्लाह शरीफ का करना जाइज़ है । अल्लाह तआला ने फरमाया :–

''और चाहिये कि लोग बैतुल्लाह का तवाफ करे'' (सुरह हज 29)

तवाफ की किस्मे

तवाफ की तीन किस्मे है :– तवाफे –कुदुम, तवाफे–इफाज़ा, तवाफे–विदाअ

(1) तवाफे–कुदुम : मक्का मे दाखिल होते ही किया जाता है

(2) तवाफे इफाज़ा : दसवी जिलहिज्जा को हज्ज के तमाम कामो को निबटा कर किया

जाता है । इस को 'तवाफे-ज़ियारत' भी कहते है ।

(3) तवाफे–विदाअ : यह रूख्सती का तवाफ है जो मक्का से रवाना से पहले किया जाता है ।

तवाफ का तरीका

रमल और इज्तिबाअ

सिर्फ तवाफे कुदुम मे पहले तीन फेरो मे रमल करना मसनून है । रमल कहते है छोटे–छोटे कदम रखते हुये तेज़ चलना (अकड़ कर चलना) । बाकी के चार फेरो मे आम चाल के मुताबिक चलना चाहिये । और 'इज्तिबाअ' यह है कि केवल तवाफे–कुदुम मे एहराम की चादर के दर्मियानी हिस्से को दाहिने कंधे के नीचे कर के चादर के हर दो कनारो को बांये कंधे पर डाला जाये इस तरह कि दाहिना कंधा खुला हो और बांया कंधा ढका हो ।

रमल करने की शुरूआत क्यो हुई

इब्ने अब्बास रजि0 रिवायत करते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा (आखिरी उमरा करने के लिये सन् 7 हि0 में) मक्का आये तो मुश्रिक लोग कहने लगे :– तुम्हारे पास वह कौम आ रही है जिस को यसरिब(मदीना) के बुखार ने कमज़ोर बना दिया है । (यह सुन कर अन के ख्याल को गलत साबित करने के लिये) नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि तवाफ के शुरू के तीन फेरो मे रमल करे (अकड़ कर चले) और दोनो यमानी रूकनों के दरमियान आम रफ्तार से चले । और सहूलत और आसानी को देखते हुये तमाम फेरो मे रमल का हुक्म नहीं दिया । (सहीह बुखारी, हज के मसाइल का बयान, हदीस नं0 1602)

तवाफ की शुरूआत

मताफ (तवाफ करने की जगह) मे हजरे असवद की सीध मे सामने की तरफ एक हरी लाईट लगी हुई है जिससे हजरे असवद से आपकी पोजीशन का अंदाजा होता है । हजरे असवद की सीध मे आकर पहले हजरे अस्वद को ''बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर'' कह कर चूमना चाहिये । अगर चूमना मुश्किल हो (भीड़ की वजह से) तो ''बिस्मिल्लाह'' कह कर हाथ से, या छड़ी से छूना चाहिये और फिर हाथ या छड़ी को बोसा देना चाहिये । यह भी मुश्किल हो तो ''बिसमिल्लाहि अल्लाहु अकबर'' कह कर हाथ से इशारा करना चाहिये लेकिन हाथ से इशारा कर के फिर हाथ नहीं चूमना चाहिये इस के बाद बैतुल्लाह को अपने बांये ओर करके तवाफ शुरू करना चाहिये :–

''अल्लाहुम्मा ईमा–नम बि–क व–तसदी–कन बिकिताबि–क व–वफा–अन बि–अहदि–क वइत्तिबा–अन लिसुन्नति नबिय्य–क सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम''

''ऐ अल्लाह तुझ पर ईमान लाते हुये, तेरी किताब की तसदीक करते हुये, तेरे वादे को पूरा करते हुये और तेरे नबी की सुन्नत की पैरवी करते हुये तवाफ करता हूं ।''

अगर यह दुआ न याद हो तो कोई भी दुआ पढ़ता रहे, वर्ना सिर्फ अल्लाहु अल्लाहु पढ़ता रहे । परन्तु तवाफ करते वक्त बीच मे इन कलिमात का पढ़ना अफ़ज़ल है :–

''सुब्हा–नल्लाहि वल–हमदु लिल्लाहि, वला इला–ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबरू, वला हौ–ल वला कुव्व–त इल्ला बिल्लाहि ।''

''अल्लाह पाक है हर किस्म की तारीफ सिर्फ अल्लाह ही के लिये है, अल्लाह के अलावा और कोई इबादत के लायक नहीं, अल्लाह सब से बड़ा है, और अल्लाह के अलावा न किसी के अंदर जोर है और न ताकत ।'' (इब्ने माजा)

रूकने यमानी का छुना

तवाफ करते समय हर चक्कर मे रूकने यमानी को भी बिसमिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर छूना चाहिये । अगर वहां भीड़ हो तो छूने पर जिद नहीं करना चाहिये, 'बिसमिल्लाहि अल्लाहु अक–बरू' कहे बिना यूं ही उस के पास से आगे बढ़ जाना चाहिये, न इशारा करना चाहिये ।

हजरे असवद और रूकने यमानी के दर्मियान की दुआ

रूकने यमानी और हजरे असवद के दर्मियान गुज़रते हुये यह दुआ पढ़नी चाहिये :–

''रब्बना आतिना फिददुनया ह–स–नतव्वफिल आखि–रति ह–स–नतव्वाकिना अजा–बन्नारि'' (अबू दावूद)

''ऐ मेरे मौला । हमे दुनिया मे भी भलाई दे और आखिरत मे भी भलाई दे, और हमें जहन्नम के अजाब से बचाये रख ।''

तवाफ का चक्कर पूरा कर के जब हजरे असवद के पास पहुंचे तो पहले की तरह या तो ''बिसमिल्लाहि अल्लाहु अकबर'' कह कर चूमना चाहिये, वर्ना हाथ या छड़ी से छू कर उस को चूमना चाहिये । या फिर हाथ से इशारा कर के दूसरे चक्कर के लिये निकल जाना चाहिये, इस तरह सात चक्कर पूरे करना चाहिये ।

तवाफ की दो रकअत

तवाफ के सात चक्कर पूरे करने के बाद मुकामे–इब्राहिम के आस–पास कहीं खड़े हो कर दो रकअते नमाज़ पढ़नी चाहिये । और इसमे पहली रकअत मे सुरह काफेरून और दुसरी रकअत मे सुरह इख्लास का पढ़ना सुन्नत है । अगर सख्त भीड़ हो तो फिर जहां भी जगह मिले वही ये रकअते पढ़ ले ।

नमाज़ के बाद अब आप ज़मज़म पर चले जाईये और पेट भर के ज़मजम पीजिये और फिर मुलतज़िम (हजरे असवद और बैतुल्लाह के दरवाजे के बीच वाला हिस्सा) पर आईये

और अल्लाह से गिड़गिड़ा गिड़ागिड़ा कर दुआएं मांगिये ।

सफा–मर्वा के दर्मियान दौड़

सफा–मर्वा के दर्मियान सई करना हज और उमरा दोनो का रूक्न है । उमरा मे बैतुल्लाह का तवाफ करने के बाद सफा–मर्वा के दर्मियान दौड़ लगाई जाती है । चुनांचे अल्लाह तआला ने सफा–मर्वा का बयान फरमाते हुये पहले सफा का जिक्र किया :–

''इन्नस्सफा वल मर व–त मिन शआइरिल्लाहि'' (सुरह बकरा)

सफा और मरवा अल्लाह की निशानिया है ।

इसलिये नबी करमी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छोड़ लगाने की शुरूआत सफा से की और फरमाया :–

''अब–द उ–बेमा बादलल्लाहु बेहि''

''मैं भी उसी से शुरू करता हूं जिस से अल्लाह ने शुरू किया है ।''(मुस्लिम)

सई (यानी दौड़ लगाने) का तरीका यह है कि सई शुरू करते वक्त सफा पहाड़ पर जो इस वक्त हरम के एक बने हुये हाल के अंदर मौजूद है, इस के कोने पर चढ़ जाना चाहिये, फिर किबला की तरफ खड़े हो कर दोनो हाथो का उठा कर ''अल्लाहु अकबर'' कहे और तीन बार यह दुआ पढ़नी चाहिये ।

''लाइला–ह इल्लल्लाहु वह–दहू ला शरी–क लहू लहुल मुलकु व–लहुल हमदु वहु–व अला कुल्लि शैइन कदीर लाइला–ह इल्लल्लाहु वह–दहु अन–ज–ज वा–दहु व–न–स–र अब–दहू व–ह–ज–मल अहज़ा–ब वह–दहू''

''अल्लाह के सिवा और कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, मुल्क उसी का है और उसी के लिये हम्द और तारीफ है, वह हर बात पर कुदरत रखने वाला है, उस ने अपना वादा पूरा किया और सभी गुटो को उस ने नेस्तानाबूद किया''(मुस्लिम, अबू दावूद)

फिर सफा से उतर कर मर्वा की तरफ तेज चाल चलना चाहिये । जब हरे रंग की जगह

(मिलेन अखराजैन) पर पहुंचे तो चाल और अधिक तेज़ कर देना चाहिये । औरतो को यहां दौड़ना ठीक नहीं । (ये वहीं जगह जहां हज़रत हाज़रा पानी की तलाश मे भटकते हुये जब हज़रत ईस्माईल नज़र नहीं आते थे तो तेज़ दौड़ा करती थी)

मर्वा पर चढ़ कर सफा ही की तरह वह दुआ और तकबीर पढ़नी चाहिये । इस तरह सात मर्तबा करना चाहिये । सफा से मर्वा तक एक फेरा हुआ, फिर मर्वा से सफा तक दो फेरे हुये । इस तरह सातवां फेरा मर्वा पर खत्म होगा । सफा और मर्वा हर दो पहाड़ो पर देर तक दुआ करनी चाहिये ।

सफा–मर्वा की दौड़ लगाने के साथ ही आपका उमरा अपने इख्तेताम पर पहुंचा ।

अब आप अपना सर हलक (मुंडाना) करवा ले या कसर (तरशवाना) कर के एहराम उतार कर हलाल हो जायें । मगर हलक करवाना अफ़ज़ल है ।

इलतेजा

ये बिलकुल हक है कि जब बंदा अल्लाह के घर मे होता है तो बाकी दुनिया से पूरी तरह कट जाता है और उसे सिवाए अल्लाह के कोई याद नहीं होता मगर फिर भी आपसे मुअद्दबाना गुजारिश है कि जब आप अपने लिए और अपने अज़ीजो के लिए दुआए करे तो इस छोटे से किताबचे को लिखने वाले गुनाहगार बंदे के हक मे भी अल्लाह से दुआ कर दे कि अल्लाह उसे आखिरत की कामयाबी से नवाज़ दे । आमीन । या रब्बुल आलेमीन ।

इस्लामिक दावाअ सेन्टर

रायपुर छत्तसीगढ़